



Original Article

**अनुदित हिंदी आत्मकथा में समस्याओं का चित्रण
 ('नाजा' शांताबाई कांबले की आत्मकथा के संदर्भ में)**

प्रा. (डॉ.) मीनाक्षी विनायक कुरणे

प्रोफेसर हिंदी विभाग

कृष्णा महाविद्यालय, रेठरे बुल, जि. सातारा

Manuscript ID: IJAAR-C130309

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 39 - 44

Submitted: 17 Jan. 2026

Revised: 23 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. (डॉ.) मीनाक्षी विनायक कुरणे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22774665

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22774665>



Creative Commons



सार:

'माज्या जल्माची चित्तरकथा' शांताबाई कांबले की मराठी साहित्य की श्रेष्ठ आत्मकथा है। इस आत्मकथा का 'नाजा' नाम से हिंदी अनुवाद रजनी तिलक तथा उषा उंभोरे ने किया है। इस आत्मकथा में लेखिका ने शिक्षा, भूख, आवास, अस्पृश्यता आदि प्रमुख समस्याओं का अंकन किया है।

मुख्य शब्द: आपबीती, शिक्षा, परंपरा, आर्थिक विवंचना, भूख, अस्पृश्यता आदि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. (डॉ.) मीनाक्षी विनायक कुरणे. (2026). अनुदित हिंदी आत्मकथा में समस्याओं का चित्रण ('नाजा' शांताबाई कांबले की आत्मकथा के संदर्भ में). *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 39 - 44. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22774665>

प्रस्तावना:

'माज्या जल्माची चित्तरकथा' शांताबाई कांबले की मराठी साहित्य की श्रेष्ठ आत्मकथा है। इस आत्मकथा का

'नाजा' नाम से हिंदी अनुवाद रजनी तिलक तथा उषा उंभोरे ने किया है। मराठी में दलित साहित्य की काफी समृद्ध परंपरा है और उसका निरंतर प्रसार हो रहा है। मराठी के दलित साहित्य



आंदोलन ने अन्य कई भारतीय भाषाओं में भी दलित लेखन को प्रोत्साहित किया है। इस संदर्भ में हिंदी साहित्य में उसका योगदान उल्लेखनीय है। इसका आरंभ स्वतंत्रता पूर्व के उस दौर से होता है जब कांग्रेस के नेतृत्व में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन से इतर दलित जन अपने सवाल को रेखांकित कर चुके थे और डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर उनकी प्रतिनिधि आवाज बन चुके थे। और, यह उस बिंदु पर समाप्त होती है जब आजादी के लगभग चार दशक बीत चुके होते हैं। रजनी तिलक लिखती है, "शांता कृष्ण कांबले की आत्मकथा एक अध्यापिका की, पति की हिंसा की शिकार दलित वर्ग की एक पत्नी की कहानी है जिसने तमाम तरह की मुश्किलों को झेलते हुए जिंदगी में एक मुकाम हासिल किया। उनकी यह कहानी उनके जमाने के अंधविश्वासों का खुलासा करती है तो परिवार में घटी घटनाओं के साथ समाज में व्याप्त छुआछूत का पर्दाफाश भी करती है! यह कभी अशिक्षित, अभावग्रस्त, उत्पीड़ित वंचित समाज की विवशता का बयान बनती है, तो कभी पितृसत्तात्मक मनोभावों पर नजर दौड़ाती है।"¹

शोध विषय का विश्लेषण:

शांताबाई कांबले ने अपनी प्रस्तुत आत्मकथा में अपने जीवन की कहानी को प्रस्तुत किया है। "नाजा" दलित परिवार में पैदा हुई एक लड़की के जीवन की कहानी है। यह आत्मकथा वस्तुतः शांता उर्फ नाजा की आपबीती है, जिसमें उपेक्षा, अभाव और अछूत होने का दर्द उसके साथ जन्म से ही लगे हुए हैं। प्रसंगवश यह किताब भारतीय समाज में गहरे जड़ जमाए बैठी, सदियों से चली आ रही जाति व्यवस्था पर चोट करती है।² इस लेखिका ने अपने निजी अनुभवों के साथ-साथ दलित समाज की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। जीवन जीते

समय दलित समाज को आनेवाली विविध समस्याओं का चित्रण किया है। इसमें शिक्षा, भूख, आवास, अस्पृश्यता आदि प्रमुख समस्याओं का अंकन किया है।

शिक्षा की समस्या:

पाठशाला में अध्यापक छात्र के गलती पर शिक्षा देते हैं। इस शिक्षा से छात्र सबक सिखता है, और भविष्य में गलती नहीं करता। लेकिन किसी छात्र को कठोर शिक्षा दी जाए तो अनपढ़ अभिभावक अपने बच्चे को पाठशाला भेजना नहीं है। स्कूल के कांबले मास्टर दलित बस्ती में बच्चों के नाम पंजीकरण करने आए हैं। लेकिन नाजा के पिताजी बच्चों को पाठशाला भेजना नहीं चाहते हैं। इसका कारण आप्पा शंकर के पाठशाला की कहानी मास्टर को बयान कर देते हैं। जिसमें छोटे बच्चे को दी गई कठोर शिक्षा का जिक्र था। अछूत होने के कारण सवर्ण अध्यापकों ने शंकर को उल्टा लटका दिया था। ऐसी शिक्षा देते समय उनके उम्र का भी ख्याल उन्हें नहीं था। शंकर को उल्टा लटकाने का दृश्य बाजार गई उसकी माँ देखती है तो 'मास्टर' के ऊपर क्रोधाग्नी बरसा देती है, तथा शंकर को स्कूल नहीं जाने देती। मास्टर के बहुत समझा-बुझाने के बाद 'आप्पा' पाठशाला में बच्चों के नाम का पंजीकरण करने को राजी होते हैं। मास्टर भी अपने कर्तव्य में दक्ष थे। वे 'दत्तु' के साथ 'नाजा' का नाम भी स्कूल में रजिस्टर करते हैं। 'नाजा' का नाम स्कूल में दाखिल करने पर आप्पा हँसकर कहते हैं - "उसकी कैसी शिक्षा? उसको शिक्षा लेकर क्या फायदा?"³ उस समय लड़कियों को स्कूल नहीं भेजा जाता सिर्फ लड़के ही स्कूल जाते थे। वे भी हर दिन नहीं हफ्ते में एखाद दिन।

लेखिका कहती है, कांबले मास्टर ने हमारे बस्ती के जालिंदर, बायनी, साळी, हारी, मातंग बस्ती के सुदाण्या, धम्या, रंगी इन सभी बच्चों का नाम स्कूल में दाखिल किया। क्योंकि



कांबळे मास्टर दिल से साफ और सच्चा इन्सान था, उन्हें हमेशा अपने बस्ती के बाल-बच्चों के पढ़ाई की चिंता सताती थी। स्वच्छता और शिस्तबद्धता की सिख वे हमेशा छात्रों को देते रहें।

नाजा अपनी बस्ती की पहली लड़की थी, जिसने परंपरा के विपरीत स्कूल का मुँह देखा था। उसने तमाम प्रतिकूलताओं से जूझते हुए पढ़ाई पूरी की और आगे चल कर खुद अध्यापिका बनी। इससे उद्धाटित होता है कि अछूत समझी जाने वाली एक लड़की भी समाज को शिक्षित करने की योग्यता रखती है यदि उसे झूठी अपात्रताओं के बोझ तले दबा न दिया जाए।

नाजा को अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के लिए कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। लेखिका ने इन समस्याओं का जिक्र इस प्रकार किया है। “पाठशाला में होनहार नाजा अपने सखियों के बहकावे में आकर आठ दिन मुँगफली के मौसम में स्कूल नहीं जाती। तब मास्टरजी एक छात्र को उसे बुलाने घर भेज देते हैं। उस समय घर में उनकी माँ भी मौजूद थीं, नाजा जब उस लड़के को मैं नहीं आऊँगी कहती है, तो गुस्से से आगबबुल हुई माँ वहीं पड़े बैल की रस्सी से लेखिका को ताड़ 5 ताड़ 5 मार देती हैं।” 4 तब से लेखिकाने अपनी पढ़ाई निरंतर जारी रखी।

आर्थिक विवंचना के कारण नाजा स्कॉलरशिप से अपनी शिक्षा पूरी करती है। ‘नाजा’ की काबिलियत देखकर हेडमास्टरजी उन्हें स्कॉलरशिप देने की सोचते हैं। अतः स्कॉलरशिप के लिए पिता के अँगुठे के छाप की आवश्यकता होने के कारण ‘नाजा के पिताजी को पाठशाला में बुलाते हैं, “सखाराम, तेरी लड़की को सरकार की तरफ से हर महीने तीस रुपए स्कालरशिप मिलेंगे। तू कागज पर अँगूठा लगा दे। इसीलिए तुझे बुलाया है।” 5 अँगुठे का छाप लेने के बाद

मास्टरजी पिता को कहने लगे कि आज के बाद तुम्हारी लड़की को स्कूल रोज आना पड़ेगा।

इसप्रकार ‘नाजा’ की शिक्षा आगे बढ़ती रही। माँ-बाप को सुखद आनंद महसूस होता रहा। फिर भी उनके जनम के बाद घटी घटना को याद करते रहे। एक साथ तीन लड़कियाँ पैदा हुई इसी कारण पिता उन्हें दफनाने की बात बोले थे, अब ‘नाजा’ सातवीं कक्षा में जा पहुँची थी।

किसानी पाठशाला में पढ़ने के अलावा पंढरपूर में जाकर अगली पढ़ाई पूरी करने की कदम मास्टर की बात से ‘नाजा’ दुखी होती है। आर्थिक विवंचना से त्रस्त नाजा की पढ़ाई कई दिनों तक बंद रही। मगर गर्मी की छुट्टी समाप्त होते ही फिरसे पाटील मास्टर का तबादला उसी पाठशाला में होता है और ‘नाजा’ को अपनी आगे की पढ़ाई पूरी करने का अवसर मिल जाता है। पाटील मास्टर उन्हें फिर से एक छात्र द्वारा स्कूल में बुलाते हैं तथा समझाते हैं, “मैं तुझे बैठने के लिए एक बेंच देता हूँ। स्कूल शुरू होते ही मेरे पास आना। तुम किसी भी तरह सातवीं पास करो। तुम्हें नौकरी मिलेगी।” 6 मास्टरजी की बात सुनकर मेरी आँखों में खुशी के आँसू भर आए। मैं लगातार स्कूल जाने लगी।

पाटील गुरुजी की पत्नी ने उनसे कहा- “नाजा की माँ चल बसी है। इसे अच्छी तरह पढ़ाना। सातवीं पास करने पर इसका कुछ भला हो जाएगा।” 7 इसी भरोसे से शांताबाई फिर से स्कूल जाती है।

भूख की समस्या:

दलित समाज के लोगों को रोजी-रोटी के साधन नहीं थे। सवर्णों के यहां कुछ काम करने पर ही कुछ जूठन मिलता था। लेखिका ने भूख की समस्या का चित्रण अपनी आत्मकथा में किया है। सुबह-सुबह नाजा की माँ खाना पकाने में मग्न है,



पिता सवर्णा के जानवर चरणे के लिए खेतों में जानेवाले हैं। गाँव के सवर्णों के जानवर चरणे के बदले में उन्हें एक समय जूठन की रोटी या कुछ अनाज वगैरा दिया जाता था। जिस पर इनका जीवन यापन चलता।

कटनी के मौसम में बस्ती के सारी औरते गाँव के सर्वर्णों के खेतों में काम करने को चली जाती। काम के बदले में मालिक जो कुछ देता वहीं रुखा-सूखा खाकर घर के सारे लोग सो जाते। इस प्रसंग में शांताबाई लिखती है, “ माँ ने जब यह सुना तो गंगू गोदा से बोली "चलो हम मूँगफलियाँ निकाल दें। आते समय हम पेट भरकर मूँगफलियाँ खाएँगे और बच्चों के लिए भी ले आएँगे।" और फिर माँ और गंगू गोदा चली गईं। हम लोगों को बहुत इंतजार करना पड़ा। जब सूरज डूबने को था तब माँ लौट कर आई। उसने थोड़ी-थोड़ी मूँगफलियाँ मेरे, दत्तू और भगवान तीनों के सामने रख दीं। गोदा ने उन मूँगफलियों को ओखल में कूट कर आप्पा को खाने को दे दिया। आप्पा ने जल्दी-जल्दी उसे खाया और लोट भर पानी पीकर आराम से बैठे।” 8

मनुवादी वर्ण व्यवस्था में दलित समाज को बंधनों में जखड़ रखा था। इन लोगों द्वारा हिन कामों का निपटारा कर ये सवर्ण लोग मालिक बनते रहे। उनका श्रम लूटते रहे। उनके भूख की धज्जिया उड़ते रहे। सदियों से उपेक्षित ये लोग भी भूख को मिटाने के अनेक प्रकार ढूँढते रहे। जैसे कि सवर्णों के जानवरों को कुछ दवा देते और सुबह मालिक जानवर मरने की खबर लेकर आते तो उन्हें बड़ा आनंद होता।

लेखिकाने प्रस्तुत आत्मकथा में ‘तरालकी’ का उल्लेख कर सदियोंसे व्यथित दलितों के उपेक्षित काम पर प्रकाश डाला है। गाँव के सवर्णों के हेय काम करना, उनकी सेवा चाकरी करना बाजार का सारा कुड़ा - कचरा साफ करना, मरे हुए जानवर उठाना और बदले में उन्होंने जो खराब, या

जूठन दिया वह भिख माँगकर लाना और जीवन यापन करना। ‘तरालकी’ आप्पा की ओर आती है तो धुला केसकर आप्पा को पुकारते हुए आते है, “ए लडकी तराल किधर है ?” मैंने आप्पा को आवाज दी। “सखाराम, आज तीन दिन से घर के पीछे कुत्ता मरा है। बदबू फैल रही है उसे फेंक दो।” 8

सातवी पास शांताबाई अपने घर की दरिद्रता मिटाने के लिए निरंतर प्रयास करती रही। इसलिए बहन के साथ सवर्णों के खेतों में कभी ‘रुई का बिनौले’ बोन जाते तो कभी गोडाई का काम करती। दिनभर हात में खुरपी पकड़ते से हात दुखता मगर काम किये बिगर खाने के लाले पड़ जाते। ‘भूख’ की दग्धता से बाल-बच्चे तक पिड़ित रहें। भूख की समस्या इन लोगों के सामने पहाड़ बनकर खड़ी थी। कटौती के मौसम में कच्चा आनाज खाना या मूँगफली के दिनों में केवल मूँगफली के दाने चबाकर सोना पड़ता। मूँगफली के दाने दातों की कमजोरी के कारण लेखिका के पिता को दाना चबाना नहीं आता तो वे ओखली में दानों का चूर्ण कर खाते और पानी पिकर सो जाने का प्रयास करते। खाने को बहुत दिनों से कुछ नहीं मिला तो ये लोग सवर्णों के जानवरों को रात में कुछ दवा देकर मारते और सुबह मालिक जानवर के मरने की खबर लेकर आते ही मनही मन खूश होते। रात का खाना खाने के बाद सारे बस्ती के लोग ‘समाज मंदिर के बरादमें में बैठकर गप्पे लड़ाते, “भैंस बहुत ताजी थी। वह ऐसे ही थोड़े न मरी थी। शाम को सभी पुरुष एक जगह बैठे तो संतू ने कहा-“मैंस बहुत ताजी थी। उसका रसा बहुत स्वादिष्ट बना था।” धोंडी ने कहा- “अरे हम लोगों ने उसे दवाई दी थी लेकिन डॉक्टर की समझ में नहीं आया।” इस पर सब हँसने लगे।” 9

कटौती के दिनों में बस्ती की सारी औरतें खेतों में चली जाती। दिनभर काम करने के बाद दँवरी से बिखरा अनाज मालिक इन औरतों को देता। साथ ही ये औरते जानवरों ने



खाई ज्वार, जो इनके गोबर से पड़ती थी वह नाले में धोकर घर लाती। यही ज्वार दलित औरत खाती और मालिक ने दी गयी ज्वार घर के पुरुष लोगों को देती। जो छुटी छुटी बातों जैसे न मगर गहरी जखम कर देते हैं। जूठन, रुखा-सुखा, बेस्वाद खाना औरत ने ही खाना चाहिए जैसी परम्परा को शांताबाई ने उद्धाटित कर नारी शोषण की ओर हमें सहजग किया है। गाँव के सवर्णों की सेवा करना, उनका मलमूत्र धोना, मरने की खबर देना, मरे हुए जानवरों को उँचलकर फेक देना, अर्थात् सारा गाँव स्वच्छ करना और इस बदले में मालिक ने दिया हुए जो कुछ है उस पर आत्मसंतोष प्राप्त करना दलितों के जीवन की व्याख्या बनी थी।

इस प्रकार लेखिकाने 'दलितों की भूख' का मूल कारण सामाजिक वर्णव्यवस्था को बिभत्सता विशद कि है। सदियों से इन लोगों को भूख, प्यास, अपमान, उपेक्षा, वेदना से दहला दिया। उन्हें अज्ञान, अंधश्रद्धा के चक्र में फसाकर निरंतर शोषण करते रहें। इसी शोषण का परिणाम डॉ. बाबासाहब कि क्रांतिकारी विचार है। जिससे आज पूरा दलित समाज अपने काम का मोबदला माँगता है। अपने हक्क, कर्तव्य समझता है।

अस्पृश्यता की समस्या:

आधुनिकीकरण के इस दौर में समाज में आज भी पिछड़ा वर्ग अस्पृश्यता की समस्या का शिकार हो रहा है। अनपढ़ ग्रामीणों से लेकर पढ़े - लिखे नागरिक पिछड़े वर्ग को अपना दास ही समझते रहे हैं। रूढ़ि - प्रिय ग्रामीण समाज में अस्पृश्य जनता को स्पृश्यों द्वारा अत्याचारों, अन्यायों का शिकार बनाकर युगों - युगों मर्दित किया जाता रहा है। बड़ी जातियाँ सामाजिक श्रेष्ठत्व के मद में गरीबों की खाल खींचते हैं

। जिससे उनके सामने अनेक समस्याएँ खड़ी हैं। स्पृश्य वर्ग के अत्याचार का वे शिकार बन रहे हैं।

‘साबले’ के घर में नाजूका की तीसरी कक्षा चलती थी। वहाँ पर सहे अस्पृश्यता के दंश को लेखिकाने स्पष्ट किया है। लेखिका लिखती है, “वहाँ पाटील मास्टर हमें बाहर बिठाते, हमें छूते नहीं। इतनाही नहीं तो पाठशाला के अन्य छात्रों को हमें छूने नहीं देते। अध्ययन में गलती होने पर दूर से ही लाठी फेंक कर मारते थे। तख्ती देखते समय हमें सूचना करते कि आपकी तख्ती नीचे रख ले। हम सभी बच्चे अपनी तख्ती नीचे रख देते तो तख्ती देखते, बाद में हम अपनी अपनी तख्ती उठा लेते।”¹⁰

मास्टर के इस व्यवहार से लेखिका अपनी माँ को कह देती है कि, माँ ‘चमार बस्ती’ के मास्टर जी अच्छे थे वे हमें कभी बाहर नहीं बिठाते। इस पर माँ लेखिका को समझाती है कि अब तुम्हें जो मास्टर है वे सवर्ण के है। वे हमारे बस्ती के बाल बच्चों को नहीं छुएँगे। माँ के इस उत्तर से लेखिका और अधिक अस्वस्थ होकर माँ को कहती है, “माँ, मास्टर जी भी आदमी है और हम भी आदमी है, फिर मास्टर जी हमसे दूर रहते है, हम को छूने नहीं देते।”¹¹

मास्टर के डर से, अस्पृश्याता भाव से दलित समाज के बच्चों पाठशाला में नहीं जाते थे। पाठशाला में छोटी छुट्टी के समय सारे बच्चे बाथरूम की ओर चले गये, लेखिका भी चली जा रही थी तो सामने से पानी का घड़ा लेकर जिजा साबले आती है। और घृणा से कहती है।-“ ऐ महार की लड़की दूर हट। मुझे छुएगी क्या! अरे, तुझे कुछ दिखता नहीं, तेरी आँखें फूट गई है क्या?”¹²

ऊँची-जाति के लोग अपने बच्चों को, निचले तबकों के लोगों से दूर रहते और छूत छात बरतने की शिक्षा संस्कार



रूप में हमेशा देते रहे हैं, जो चिंता का विषय बनकर आज भी हमारे देश को सताती रही है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शांताबाई कांबले ने अपनी प्रस्तुत आत्मकथा में अपने जीवन की कहानी को प्रस्तुत किया है। जीवन जीते समय दलित समाज को आनेवाली विविध समस्याओं का चित्रण किया है। इसमें भूख, शिक्षा, अस्पृश्यता, आदि समस्याओं का अंकन किया है। नाजा को अपना मुकाम हासिल करने के लिए बाहरी समस्याओं के साथ ही घर के भीतर मौजूद पुरुषवादी वर्चस्व और पितृसत्तात्मक परंपरा से भी संघर्ष करना पड़ा है।

संदर्भ सूची:

1. कांबले शांताबाई- 'नाजा' दानिश बुक्स 26 दी, स्काईलार्क अपार्टमेंट्स गाजीपुर, दिल्ली-प्र. सं. 2009 पृ. आमुख - X
2. कांबले शांताबाई- 'नाजा' दानिश बुक्स 26 दी, स्काईलार्क अपार्टमेंट्स गाजीपुर, दिल्ली-पृ. फ्लैप पर
3. वही, पृ.2
4. वही, पृ.5
5. वही, पृ. 30
6. वही, पृ. 47
7. वही, पृ. 47
8. वही, पृ. 55
9. वही, पृ.21
10. वही, पृ.33
11. वही, पृ.34
12. वही, पृ. 35